विकास प्रशासन के तत्व अथवा लक्षण

'विकास प्रशासन' की संकल्पना को समझने के लिए उसके प्रमुख तत्व या लक्षण समझना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं

1. परिवर्तन - उन्मुखी — विकास प्रशासन परिवर्तन-उन्मुखी प्रशासन है। परिवर्तन का अर्थ है किसी व्यवस्था का एक स्थिति से दूसरी स्थिति की ओर गतिमान होना । विकास का प्रशासनिक तन्त्र निश्चल और गतिहीन न होकर परिवर्तनशील होता है।

2. लक्ष्य उन्मुखी — विकास प्रशासन का केन्द्रण अधिक व्यवस्थित ढंग से लक्ष्यों की प्राप्ति पर है । वाईडनर के अनुसार विकास प्रशासन 'लक्ष्य-अभिमुखी' प्रशासन है। ये सभी लक्ष्य स्वभावतः प्रगतिशील और आगे की ओर ले जाने वाले होते हैं।

3. प्रगतिशीलता लक्ष्यों की प्रगतिशीलता भी विकास प्रशासन का एक प्रमुख तत्व है। प्रगतिशीलता से अभिप्राय है कि शासन कार्यों में लोगों की अधिक-से-अधिक भागीदारी अर्थात् विकास के प्रशासनिक तन्त्र से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसी परिस्थितियां पैदा करे जो विकास प्रक्रिया में लोगों को अधिक सहभागी बनाने में सहायक होंनियोजन— पाइ पानिन्दीकर विकास प्रशासन को 'नियोजित परिवर्तन' के प्रशासन के रूप में देखते हैं। एक निश्चित अवधि में कुछ सुनिश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने के कार्यक्रम के रूप में नियोजन समय तथा विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने वाले साधनों के अधिकतम सम्भव उपयोग में सहायक होता है। अतः अधिकांश विकासशील देशों ने सामाजिक-आर्थिक नियोजन को विकास की रणनीति के रूप में अपनाया है।

5. नवाचार- — विकास से सम्बन्धित विविध समस्याओं के समाधान के लिए विकास प्रशासन का तरीका परम्पराजनित अथवा सिद्धान्तवादिता से बंधा हुआ नहीं होता। इसके बजाए वह नए ढांचों, पद्धतियों, कार्यक्रमों को अपनाने पर बल देता.. है। भारत में डी. आर. डी. ए., सी.ए. डी., जैसे कार्यक्रम इन नवाचारों के परिचायक हैं।

6. प्रशासन तन्त्र में लचीलापन–परम्परागत प्रशासन-तन्त्र नौकरशाही पर आधारित था जबकि विकास प्रशासन में प्रशासन तन्त्र को राजनीतिज्ञों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिल-जुलकर कार्य करना होता है। प्रशासन नियमों के जाल में ही बंधा नहीं रहता, अपितु विशिष्ट परिस्थितियों में प्रशासन को स्वविवेक से नियम लागू करने की स्वायत्तता होती है।

7. सहभागिता – विकास प्रशासन में विकास कार्यक्रम बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में लोगों का सहभागी होना निहित है। भारत में पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से लोगों की विकास कार्यों में सहभागिता को प्रेरित किया जा रहा है। वस्तुतः विकास का प्रशासनिक तन्त्र कार्य व अधिकार सौंपने तथा सलाह-मशविरा लेने की रणनीति का प्रभावी ढंग से उपयोग करता है और इस प्रकार अनुशासन को 'आधार' (Grassroot) उन्मुखी बनाता है।लाभ-भोगी अभिमुखीकरण – विकास प्रशासन का प्रशासनिक तन्त्र लाभ-भोगी अभिमुखी प्रशासन है। इसका उद्देश्य उन्हीं लोगों को अपनी सेवाओं और उत्पादन का अधिकतम लाभ पहुंचाना है जिनके लिए संगठन बनाए जाते हैं। यह अपने लाभ-भोगियों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देता है और अपने कार्यक्रम, नीतियों और कार्यकलापों को इन्हीं आव श्यकताओं के अनुरूप बनाने की कोशिश करता है।

9. प्रभावी एकीकरण – विकासात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अधिकारियों और समूहों के दल को साथ-साथ लाने के लिए प्रशासनिक संगठन में एकीकरण करने की उच्च कोटि की क्षमता आवश्यक है। वस्तुत उच्च कोटि का समन्वय या एकीकरण विकास प्रशासन की विशेषता है। यदि एकीकरण का स्तर नीचा है तो विकास के प्रतिफलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहेगी।विकास की प्रशासनिक स्थिति में विभिन्न संगठनों और इकाइयों के बीच, विभिन्न पदों और कार्यकर्ताओं के बीच तथा लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उपलब्ध संसाधनों के बीच विभिन्न स्तरों पर समन्वय प्रभावी करना आवश्यक है। समन्वय के अभाव में संसाधनों की बरबादी और प्रभावशीलता की कमी ही होगी।

संक्षेप में, विकास प्रशासन लक्ष्य-उन्मुखी, परिवर्तन अभिमुखी, प्रगतिशील, लचीला और सहभागी स्वरूप वाला प्रशासन है।